॥ संस्कृत पद्य पीयूषम् ॥

मङ्गलाचरणम्

[प्रस्तुत मंगलाचरण में जो श्लोक (मन्त्र) प्रस्तुत किये गये हैं वे ऋग्वेद, शुक्ल यजुर्वेद तथा अथर्ववेद से लिये गये हैं। विश्व के साहित्य में सबसे पुराना साहित्य भारत के वेद ही हैं। इन वेदों में अथाह ज्ञान और विज्ञान भरा पड़ा है। प्रस्तुत मंगलाचरण में ईश्वर से प्रार्थना की गयी है कि हमारे अन्दर जो भी विचार उत्पन्न हों वे शुभ और कल्याणकारी हों, जो भी आँखों से देखें वे शुभ हों, जो भी कानों से सुनें केवल अच्छी बातें ही सुनें। हमारे दिन और रात आनन्दमयी हों, आकाश का प्रकाश हमारा कल्याण करे, हम सभी साथ-साथ बोलें, साथ-साथ चलें, बहुत तेज गति से चलनेवाला मेरा मन सभी कार्यों को उसी तरह नियन्त्रित करता रहे जिस प्रकार एक कुशल रथ चलानेवाला लगामों के द्वारा तेज चलनेवाले घोड़ों को नियन्त्रित करके सही दिशा में ले जाता है। जो परब्रह्म परमात्मा भूतकाल में उत्पन्न हुआ और भविष्य में उत्पन्न होनेवाले सभी पदार्थों में उपस्थित रहता है अर्थात् जिसकी कृपा से मनुष्य स्वर्ग प्राप्त करता है उस महान् परब्रह्म को मैं नमस्कार करता हूँ।]

१. **(क) आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतः ...।**
(ख) भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवाः
भद्रं पश्येमाक्षिभिर्यजत्राः। ऋग्वेद १।८९।१,८

२. **मधु नक्तमुतोषसो मधुमत् पार्थिवं रजः।**
मधु द्यौरस्तु नः पिता।।
मधुमान् नो वनस्पतिर्मधुमान् अस्तु सूर्यः।
माध्वीर्गावो भवन्तु नः।। ऋग्वेद १।९०।७,८

३. **सं गच्छध्वं सं वदध्वं, सं वो मनांसि जानताम्।**
समानो मन्त्रः समितिः समानी, समानं मनः सह चित्तमेषाम्। ऋग्वेद १।१९१।२,३

४. **सुषारथिरश्वानिव यन्मनुष्यान्।**
नेनीयतेऽभीषुभिर् वाजिन इव।
हृत्प्रतिष्ठं यदजिरं जविष्ठं
तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु।। शुक्ल यजुर्वेद ३४।१

५. **यो भूतं च भव्यं च**
सर्वं यश्चाधितिष्ठति।
स्वर्यस्य च केवलं तस्मै
ज्येष्ठाय ब्रह्मणे नमः।। अथर्ववेद १०।१।१

अभ्यास-प्रश्न

१. निम्नलिखित श्लोकों की हिन्दी में ससन्दर्भ व्याख्या कीजिए—

(क) मधु नक्तमुतोषसो मधुमत् पार्थिवं रज:।
मधु द्यौरस्तु न: पिता।।
मधुमान् नो वनस्पतिर्मधुमान् अस्तु सूर्य:।
माध्वीर्गावो भवन्तु न:।।

(ख) सं गच्छध्वं सं वदध्वं, सं वो मनांसि जानताम्।
समानो मन्त्र: समिति: समानी, समानं मन: सह चित्तमेषाम्।

(ग) सुषारथिरश्वानिव यन्मनुष्यान् ।
नेनीयतेऽभीषुभिर् वाजिन इव।
हृत्प्रतिष्ठं यदजिरं जविष्ठं
तन्मे मन: शिवसंकल्पमस्तु।।

(घ) यो भूतं च भव्यं च
सर्वं यश्चाधितिष्ठति।
स्वर्यस्य च केवलं तस्मै
ज्येष्ठाय ब्रह्मणे नम:।।

२. 'सं गच्छध्वं सं वदध्वं' सूक्ति की सन्दर्भ सहित हिन्दी में व्याख्या कीजिए।

३. मङ्गलाचरणम् के मन्त्रों को कण्ठस्थ कीजिए।

➨ आन्तरिक मूल्यांकन

यदि आपको भी कुछ मन्त्र कण्ठस्थ हों तो उनकी एक सूची बनाइए।

●●●